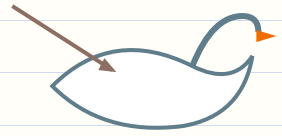


कक्षा 7 · हिंदी · 'मल्हार' (NCERT) · कविता

पाठ 1

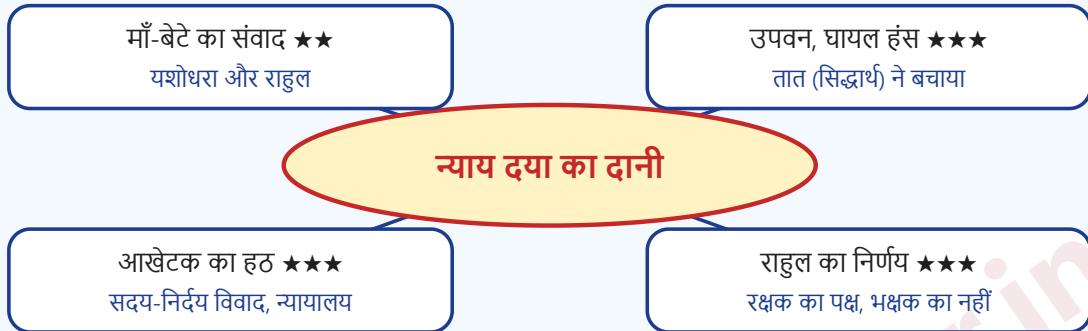
माँ, कह एक कहानी

मैथिलीशरण गुप्त · 'यशोधरा' से · संवाद शैली · न्याय दया का दानी



घायल हंस किसका?

पाठ का मानचित्र (★ = परीक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण)



कवि परिचय

मैथिलीशरण गुप्त (1886–1964), जन्म **चिरगाँव, झाँसी (उत्तर प्रदेश)**। पंद्रह-सोलह वर्ष की आयु में कविता लिखने लगे; पहले ब्रज भाषा में, फिर खड़ी बोली हिंदी में। स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी रचनाओं ने देशप्रेम जगाया; '**राष्ट्रकवि**' के रूप में प्रसिद्ध। रचनाओं में धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय चेतना। प्रमुख कृतियाँ: **साकेत, भारत-भारती, यशोधरा**।

स्रोत: यह कविता '**यशोधरा**' काव्य से ली गई है: **माँ यशोधरा** और बेटे **राहुल** के बीच **संवाद शैली** में। कहानी के 'तात' = **सिद्धार्थ** (बाद में गौतम बुद्ध)।

★ **परीक्षा-सुझाव:** परीक्षा में: **पात्रों की पहचान** (यशोधरा, राहुल, सिद्धार्थ), **हंस की कहानी**, **सदय-निर्दय विवाद**, '**न्याय दया का दानी**' का अर्थ, **कौन-सा कथन किसका** (संवाद), **पंक्तियों का अर्थ-मिलान**, कविता की विशेषताएँ (आवृत्ति, तुक, विपरीतार्थक), विराम-चिह्न, पहेलियाँ।

एक पंक्ति में: बेटा राहुल माँ से कहानी सुनाने की ज़िद करता है; माँ बताती है कि उसके पिता ने उपवन में तीर से घायल हंस को बचाया, आखेटक ने हंस माँगा, विवाद न्यायालय तक गया; माँ राहुल से निर्णय पूछती है और वह कहता है कि बचाने वाले (रक्षक) का पक्ष ही सही है: **न्याय वही जो दया से भरा हो**।

1.1 कविता का भावार्थ ★★★

“माँ, कह एक कहानी।”
 “बेटा, समझ लिया क्या तूने
 मुझको अपनी नानी?”
 “कहती है मुझसे यह चेटी,
 तू मेरी नानी की बेटी!
 कह माँ, कह, लेटी ही लेटी,
 राजा था या रानी?...”

उत्तर: राहुल माँ से कहानी सुनाने को कहता है। माँ हँसकर पूछती है: क्या तूने मुझे अपनी नानी समझ लिया (कहानियाँ तो नानी सुनाती है)? राहुल चतुराई से उत्तर देता है: यह **चेटी** (दासी) कहती है कि तू मेरी नानी की बेटी है (यानी माँ), इसलिए लेटे-लेटे ही कहानी सुना दो: राजा था या रानी?

“तू है हठी मानधन मेरे,
 सुन, उपवन में बड़े सबेरे,
 तात भ्रमण करते थे तेरे,
 जहाँ, सुरभि मनमानी।”
 “वर्ण वर्ण के फूल खिले थे,
 झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे,
 हलके झोंके हिले-मिले थे,
 लहराता था पानी।”

उत्तर: माँ कहती है: मेरे **मानधन** (प्यारे, स्वाभिमानी) बेटे, तू बड़ा **हठी** है। सुन, एक दिन तेरे **तात** (पिता) बड़े सबेरे उस **उपवन** में घूम रहे थे जहाँ मनचाही **सुरभि** (सुगंध) फैली थी। रंग-बिरंगे फूल खिले थे, ओस की बूँदें (**हिम-बिंदु**) झिलमिला रही थीं, हल्की हवा के झोंके चल रहे थे, पानी लहरा रहा था (**प्रकृति-चित्रण**)। राहुल हर बार दोहराता है: ‘हाँ माँ, यही कहानी।’

“गाते थे खग कल कल स्वर से,
 सहसा एक हंस ऊपर से,
 गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से,
 हुई पक्ष की हानी!”
 “चौंक उन्होंने उसे उठाया,
 नया जन्म-सा उसने पाया।
 इतने में आखेटक आया,
 लक्ष्य-सिद्धि का मानी।”

उत्तर: पक्षी मधुर स्वर में गा रहे थे; अचानक एक **हंस** तेज़ **तीर (खर-शर)** से **बिंधकर** ऊपर से गिरा; उसके पंख घायल हुए। राहुल: ‘करुणा-भरी कहानी!’ पिता ने चौंककर उसे उठाया; हंस को जैसे नया जन्म मिला। तभी अपने निशाने की सफलता पर घमंड करने वाला **आखेटक** (शिकारी) आ गया।

“माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किंतु थे रक्षी।
तब उसने, जो था खगभक्षी-
हठ करने की ठानी।”
“हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गई बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी।”

उत्तर: शिकारी ने घायल पक्षी माँगा, पर तेरे पिता **रक्षक** थे। तब उस पक्षी खाने वाले (**खगभक्षी**) ने हठ ठान ली। **दयालु (सदय)** और **निर्दयी (निर्दय)** में विवाद हुआ; **दोनों (उभय)** अपनी-अपनी बात पर अड़े थे; बात **न्यायालय** तक पहुँची और सबने सुनी (**व्यापक हुई कहानी**)।

“राहुल, तू निर्णय कर इसका-
न्याय पक्ष लेता है किसका?...”
“माँ, मेरी क्या बानी?...
कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी!”
“न्याय दया का दानी?
तूने गुनी कहानी।”

उत्तर: माँ कहती है: राहुल, निडर होकर तू ही निर्णय कर, न्याय किसका पक्ष लेता है; मैं तेरी **बानी** (वाणी) सुनूँ। राहुल पहले कहता है ‘मैं तो कहानी सुन रहा हूँ’, फिर बोलता है: यदि कोई **निरपराध** को मारे तो दूसरा उसे क्यों न बचाए? न्याय **रक्षक** को छोड़कर **भक्षक** का पक्ष कैसे ले; **न्याय तो दया का दानी** है (न्याय में दया होती है)। माँ प्रसन्न होकर कहती है: **‘तूने कहानी गुन ली’** (समझ ली)।

1.2 काव्य-सौंदर्य ★★★

• **संवादात्मक शैली:** पूरी कविता माँ-बेटे की बातचीत; उद्धरण-चिह्न से वक्ता बदलता है। • **वर्णनात्मक शैली:** उपवन, फूल, ओस, हवा, पानी का चित्रण। • **आवृत्ति:** हर पद का अंतिम अंश बेटा दोहराता है (**‘लहराता था पानी? हाँ, हाँ, यही कहानी’**): गेयता और रोचकता। • **तुकांत:** मेरे-सबेरे-तेरे, खिले-झिले-मिले, पक्षी-रक्षी-खगभक्षी, कहानी-नानी-रानी।

• **पुनरुक्ति:** वर्ण वर्ण, कल कल, लेटी ही लेटी। • **विपरीतार्थक:** सदय-निर्दय, कोमल-कठिन, रक्षक-भक्षक। • **अनुप्रास:** ‘हलके झोंके हिले-मिले’, ‘कह माँ, कह’। • **वर्तनी-परिवर्तन:** हानी (हानि), सबेरे (सवेरे), बानी (वाणी)। • **भाषा:** खड़ी बोली, तत्सम (आखेटक, खगभक्षी, उभय, सदय)। • **रस:** करुण, वात्सल्य। • **संदेश:** करुणा, न्याय, अहिंसा; बच्चे में सही-गलत की समझ।

शब्दार्थ: चेटी = दासी, सेविका; मानधन = स्वाभिमानी, प्रिय; तात = पिता; उपवन = बगीचा; सुरभि = सुगंध; वर्ण = रंग; हिम-बिंदु = ओस की बूँद; झिले = झिलमिलाए; खग = पक्षी; बिद्ध = बिंधा हुआ; खर-शर = तेज़ तीर; पक्ष = पंख; आखेटक = शिकारी; लक्ष्य-सिद्धि का मानी = निशाना लगने पर गर्व करने वाला; आहत = घायल; रक्षी = रक्षक; खगभक्षी = पक्षी खाने वाला; सदय = दयालु; निर्दय = कठोर; उभय = दोनों; आग्रही = हठी; स्वविषय = अपनी बात; बानी = वाणी; उबारे = बचाए; वारे = न्योछावर करे; गुनी = समझी।

पाठ्यपुस्तक 'मल्हार' के अभ्यास, हल

मेरी समझ से

उत्तर: (1) उसमें सही और गलत की समझ विकसित करने के लिए। (2) करुणा और हिंसा के बीच के संघर्ष को दिखाने के लिए। (3) न्याय सदैव करुणा के साथ होना चाहिए।

मिलकर करें मिलान (पात्र)

उत्तर: बेटा → राहुल (सिद्धार्थ और यशोधरा का पुत्र) · माँ → यशोधरा (राजकुमारी, सिद्धार्थ की पत्नी) · तात → सिद्धार्थ (बाद में गौतम बुद्ध)।

पंक्तियों पर चर्चा

उत्तर: (क) निर्दोष को कोई मारे तो दूसरों का कर्तव्य है उसे बचाना; न्याय मारने वाले का नहीं, बचाने वाले का साथ देता है, क्योंकि न्याय में दया होती है। (ख) दयालु और निर्दयी दोनों अपनी बात पर अड़े रहे; बात न्यायालय गई, सबने सुनी और जानी।

सोच-विचार के लिए

उत्तर: (क) 'न्याय दया का दानी': पूरी कहानी का सार है कि सच्चा न्याय करुणा से जुड़ा है (अपना कारण लिखें)। (ख) आखेटक ने तीर से हंस गिराया, इसलिए उसे अपना मानता था; पिता ने उसे बचाया, इसलिए वे उसके रक्षक थे; दोनों हंस पर अपना अधिकार जता रहे थे। (ग) बेटे की समझ परखने, उसमें स्वयं सोचने और निर्णय लेने की क्षमता जगाने के लिए; कहानी से सही-गलत की सीख देने के लिए। (घ) हंस के घाव पर पानी डालता, मरहम-पट्टी करता, सुरक्षित स्थान पर रखता; न्याय यह कि जीवन बचाने वाले को पक्षी मिले, और शिकारी को समझाया जाए। (ङ) माँ स्नेही, धैर्यवान, बुद्धिमान, बेटे को सीख देने वाली; बेटा जिज्ञासु, हठी, चतुर, संवेदनशील और न्यायप्रिय।

अनुमान और कल्पना से

उत्तर: (क) 'न्यायाधीश ने सब सुनकर कहा: जीवन देने वाला, जीवन लेने वाले से बड़ा है; हंस रक्षक को मिला...' (ख) हंस: 'मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था?' शिकारी: 'मैंने निशाना साधा, तुम मेरे हो।' हंस: 'जीवन किसी की संपत्ति नहीं...' (ग) पक्षी को बचाने वाला व्यक्ति (या न्यायाधीश): दूसरों की रक्षा करना सबसे अच्छा काम है।

संवाद: कौन-सा कथन किसका

उत्तर: पुत्र: 'माँ, कह एक कहानी'; 'कहती है मुझसे यह चेटी... राजा था या रानी?'; 'जहाँ सुरभि मनमानी? हाँ, माँ, यही कहानी'; 'लहराता था पानी? हाँ, हाँ, यही कहानी'; 'हुई पक्ष की हानी? करुणा-भरी कहानी!'; 'लक्ष्य-सिद्धि का मानी? कोमल-कठिन कहानी'; 'हठ करने की ठानी? अब बढ़ चली कहानी'; 'सुनी सभी ने जानी? व्यापक हुई कहानी'; 'माँ, मेरी क्या बानी?... न्याय दया का दानी!'

माँ: 'बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी?'; 'तू है हठी मानधन मेरे... सुरभि मनमानी'; 'वर्ण वर्ण के फूल... लहराता था पानी'; 'गाते थे खग... हुई पक्ष की हानी!'; 'चौक उन्होंने... लक्ष्य-सिद्धि का मानी'; 'माँगा उसने... हठ करने की ठानी'; 'हुआ विवाद... सुनी सभी ने जानी'; 'राहुल, तू निर्णय कर... सुन लूँ तेरी बानी'; 'न्याय दया का दानी? तूने गुनी कहानी!'

शब्द से जुड़े शब्द (प्रकृति)

उत्तर: उपवन, सुरभि, फूल, हिम-बिंदु (ओस), झोंके (हवा), पानी, खग, हंस।

पंक्ति से पंक्ति (मिलान)

उत्तर: 1 (चेटी) → 7 (यह सेविका कहती है) · 2 (हठी मानधन) → 9 (तू बहुत हठ करता है) · 3 (हिम-बिंदु झिले) → 5 (ओस की बूँदें झिलमिला रहीं) · 4 (बिद्ध होकर खर-शर से) → 8 (तेज़ तीर से घायल होकर गिरा) · 5 (सदय-निर्दय विवाद) → 3 (दयालु और निर्दयी में झगड़ा) · 6 (कह दे निर्भय) → 2 (बिना डरे कह दे जीत किसकी हो) · 7 (तूने गुनी कहानी) → 6 (तूने कहानी समझ ली) · 8 (उभय आग्रही) → 1 (दोनों अपनी बात पर अड़े) · 9

(खगभक्षी... हठ ठानी) → 10 (तीर चलाने वाले ने हठ का निश्चय किया) · 10 (रक्षक पर भक्षक को वारे...) → 4 (न्याय में दया, न्याय बचाने वाले का पक्ष लेता है)

कविता की रचना: विशेषताओं का मिलान

उत्तर: 1 संवाद → पंक्ति 3 ('बेटा, समझ लिया...') · 2 तुक → पंक्ति 6 (खिले-झिले-मिले), 4 (मेरे-सबेरे) · 3 शब्द दो बार → पंक्ति 6 (वर्ण वर्ण) · 4 विपरीतार्थक → पंक्ति 1 (सदय-निर्दय), 5 (कोमल-कठिन) · 5 प्रकृति-वर्णन → पंक्ति 6 · 6 एक ही वर्ण से शुरू शब्द → पंक्ति 6 (हलके... हिले), 3 (मुझसे... मेरी) · 7 प्रश्न-उत्तर → पंक्ति 3 · 8 वर्तनी बदली → पंक्ति 2 (हानी), 4 (सबेरे)

रूप बदलकर (गद्य में)

उत्तर: 'फूल रंग-बिरंगे खिले हुए थे, ओस की बूँदें झिलमिला रही थीं, हल्की हवा के झोंके चल रहे थे और तालाब का पानी लहरा रहा था।'

कविता में विराम चिह्न

उत्तर: "राहुल, तू निर्णय कर इसका- न्याय पक्ष लेता है किसका? कह दे निर्भय, जय हो जिसका। सुन लूँ तेरी बानी।" "माँ, मेरी क्या बानी? मैं सुन रहा कहानी। कोई निरपराध को मारे, तो क्यों अन्य उसे न उबारे? रक्षक पर भक्षक को वारे, न्याय दया का दानी!" "न्याय दया का दानी? तूने गुनी कहानी।"

आज की पहेली

उत्तर: पहेली 1: **माँ** (नानी की बेटी, मामा की बहन, पिता की भार्या, चाचा की भाभी) · पहेली 2: **खग/पक्षी (हंस)** · पहेली 3: **सुरभि** (सुगंध)

निर्णय करें (उत्तर-संकेत)

उत्तर: 1. मित्र को प्यार से नियम बताना, खेल निष्पक्ष रखना 2. चिढ़ाने वालों को रोकना, सहपाठी का साथ देना 3. उससे बात करके कारण जानना, मदद करना, फिर भी न करे तो शिक्षक को बताना 4. दोनों की बात सुनकर समझौता कराना 5. सच बताकर उसके पक्ष में खड़ा होना 6. उसका हौसला बढ़ाना 7. उसे बोलने का अवसर दिलाना 8. धैर्य से समझाना। (सब में भाव: 'न्याय दया का दानी')

महत्त्वपूर्ण परीक्षा प्रश्न ★★

A. पठित काव्यांश (5 × 1)

"माँगा उसने आहत पक्षी, / तेरे तात किंतु थे रक्षी। / तब उसने, जो था खगभक्षी- / हठ करने की ठानी।"

- 'उसने' किसके लिए आया है? (A) तात (B) आखेटक (C) राहुल (D) चेटी
- 'आहत' का अर्थ: (A) घायल (B) सुंदर (C) मृत (D) उड़ता
- तात क्या थे? (A) भक्षक (B) रक्षक (C) शिकारी (D) न्यायाधीश
- 'खगभक्षी': (A) पक्षी पालने वाला (B) पक्षी खाने वाला (C) पक्षी-प्रेमी (D) हंस
- आखेटक ने क्या किया? (A) क्षमा माँगी (B) हठ ठान ली (C) हंस छोड़ दिया (D) चला गया

उत्तर: (i) **(B)** (ii) **(A)** (iii) **(B)** (iv) **(B)** (v) **(B)**

B. लघु / दीर्घ उत्तरीय

- माँ ने 'बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी?' क्यों कहा?

उत्तर: प्रायः नानी-दादी बच्चों को कहानियाँ सुनाती हैं; राहुल ने माँ से कहानी माँगी तो माँ ने स्नेह भरे विनोद में पूछा कि क्या तू मुझे अपनी नानी समझ रहा है।

- 'माँ, कह एक कहानी' कविता का संदेश स्पष्ट कीजिए। (5 अंक)

उत्तर: कविता माँ-बेटे के मधुर संवाद में करुणा और न्याय की सीख देती है। उपवन में तीर से घायल हंस को सिद्धार्थ ने बचाया; शिकारी ने उसे अपना बताकर हठ की; विवाद न्यायालय पहुँचा। माँ ने निर्णय राहुल पर छोड़ा, जिससे वह स्वयं सोचे। राहुल ने कहा कि निरपराध को मारने वाले के बजाय बचाने वाले का पक्ष लेना ही न्याय है;

‘न्याय दया का दानी’। संदेश: जीवों के प्रति दया, निर्दोष की रक्षा, अहिंसा; न्याय करुणा से अलग नहीं; बच्चों को कहानियों से नैतिक निर्णय करना सिखाना।

अभ्यास सेट: स्वयं को परखें

A. रिक्त स्थान: 1. बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी ____? 2. तू है हठी ____ मेरे। 3. सहसा एक ____ ऊपर से गिरा। 4. इतने में ____ आया। 5. न्याय ____ का दानी।

B. सही/गलत: 1. कविता ‘साकेत’ से ली गई है। 2. हंस तीर से घायल हुआ। 3. तात ने हंस शिकारी को दे दिया। 4. विवाद न्यायालय तक गया। 5. राहुल ने रक्षक का पक्ष लिया।

C-G: 1. कविता की कहानी अपने शब्दों में। 2. किसी लोककथा को लिखिए। 3. घायल पक्षी मिले तो आप क्या करेंगे? 4. माँ से सुनी कोई कहानी। 5. ‘दया धर्म का मूल है’ पर पाँच वाक्य।

बहुविकल्पी प्रश्न: 20 MCQs

- ‘माँ, कह एक कहानी’ के कवि:
 - हरिवंशराय बच्चन
 - सुमित्रानंदन पंत
 - मैथिलीशरण गुप्त
 - निराला
- कविता किस कृति से ली गई है?
 - यशोधरा
 - साकेत
 - भारत-भारती
 - पंचवटी
- कवि का जन्म:
 - प्रयागराज
 - काशी
 - इटावा
 - चिरगाँव, झाँसी
- मैथिलीशरण गुप्त किस नाम से प्रसिद्ध हैं?
 - महाकवि
 - राष्ट्रकवि
 - जनकवि
 - बालकवि
- कविता में ‘बेटा’ कौन है?
 - सिद्धार्थ
 - राहुल
 - आनंद
 - लव
- ‘तात’ किसे कहा गया है?
 - राहुल
 - आखेटक
 - न्यायाधीश
 - सिद्धार्थ
- ‘चेटी’ का अर्थ:
 - दासी
 - सहेली
 - नानी
 - बेटी
- कविता किस शैली में है?
 - डायरी
 - पत्र
 - संवाद
 - निबंध
- हंस कैसे घायल हुआ?
 - पथर से
 - गिरकर
 - जाल से
 - तीर से
- ‘आखेटक’ का अर्थ:
 - माली
 - शिकारी
 - राजा
 - सैनिक
- ‘सदय-निर्दय’ हैं:
 - पर्यायवाची
 - अनेकार्थी
 - विपरीतार्थक
 - तद्भव
- विवाद कहाँ गया?
 - न्यायालय
 - मंदिर
 - वन
 - पाठशाला
- ‘हिम-बिंदु’ का अर्थ:
 - बर्फ का पहाड़
 - ओस की बूँद
 - वर्षा
 - तारा
- ‘सुरभि’ का अर्थ:
 - फूल
 - गाय
 - सुगंध
 - हवा
- ‘उभय’ का अर्थ:
 - डर
 - एक
 - कोई नहीं
 - दोनों
- न्याय किसका पक्ष लेता है (राहुल के अनुसार)?
 - रक्षक
 - भक्षक
 - राजा
 - बलवान
- ‘न्याय दया का दानी’ का भाव:
 - न्याय में दया होती है
 - न्याय दान है
 - दया बुरी है
 - न्याय कठोर है
- ‘तूने गुनी कहानी’ में ‘गुनी’:
 - गाई
 - लिखी
 - भूली
 - समझी
- ‘वर्ण वर्ण के फूल’ में:
 - अनेकार्थी
 - पुनरुक्ति
 - विलोम
 - संधि
- कवि की कृति नहीं है:
 - साकेत
 - भारत-भारती
 - कामायनी
 - यशोधरा

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: सिद्धार्थ ने हंस शिकारी को नहीं दिया। कारण: वे रक्षक थे और न्याय दया से जुड़ा है।
2. कथन: माँ ने निर्णय राहुल पर छोड़ा। कारण: वह बेटे में स्वयं सोचने की समझ जगाना चाहती थी।
3. कथन: राहुल ने भक्षक का पक्ष लिया। कारण: शिकारी ने तीर चलाया था।
4. कथन: कविता में बार-बार पंक्तियाँ दोहराई गई हैं। कारण: इससे संवाद और गेयता बढ़ती है।
5. कथन: मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रकवि कहलाए। कारण: उनका जन्म चिरगाँव में हुआ।
6. कथन: शिकारी ने हंस पाकर क्षमा माँगी। कारण: वह 'लक्ष्य-सिद्धि का मानी' था।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (A) · 5 (B) · 6 (D)

उत्तर: अभ्यास सेट

A. 1. नानी 2. मानधन 3. हंस 4. आखेटक 5. दया

B. 1. गलत (यशोधरा) 2. सही 3. गलत 4. सही 5. सही

C-G: 1. 'राहुल ने माँ से कहानी माँगी...' 2. अपनी भाषा की लोककथा 3. पानी, छाया, पशु-चिकित्सक/वन विभाग को सूचना 4. अपनी कहानी 5. दया से दूसरों का दुख घटता है...

- **अंतिम-रात सारांश:** मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964), चिरगाँव (झाँसी); राष्ट्रकवि; साकेत, भारत-भारती, यशोधरा; कविता 'यशोधरा' से, संवाद शैली।
- पात्र: माँ = यशोधरा, बेटा = राहुल, तात = सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध); चेटी = दासी।
- कहानी: उपवन (सुरभि, फूल, ओस, पानी) → तीर (खर-शर) से हंस घायल → तात ने बचाया → आखेटक (खगभक्षी) का हठ → सदय-निर्दय विवाद → न्यायालय।
- राहुल का निर्णय: 'कोई निरपराध को मारे, तो क्यों अन्य उसे न उबारे? ... न्याय दया का दानी!'; माँ: 'तूने गुनी कहानी।'।
- शिल्प: संवाद, आवृत्ति, तुक, विपरीतार्थक (सदय-निर्दय, कोमल-कठिन, रक्षक-भक्षक), पुनरुक्ति (वर्ण वर्ण); पहेलियाँ: माँ, खग, सुरभि।